दिनांक 22-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

स्वमान में स्थित होना ही सर्व खजानें और खुशी की चाबी है
व
टीचर बनना अर्थात् सौभाग्य की लॉटरी लेना

अपनी स्थिति सदा के लिए ऐसी सहज बनाओ
खुद को सदा श्रेष्ठ स्वमान में स्थित करते जाओ

औरों के प्रति शुभ कामना रखकर चलते जाओ
स्व भावना जगाए रखकर सबको देखते जाओ

स्वमान शब्द को प्रेक्टिकल जीवन में अपनाओ
सहज रूप से अपनी सम्पूर्ण अवस्था को पाओ

स्वमान में स्थित होकर अपना अन्तर्मन खंगालो
मैं कौन हूँ जरा तुम इस पहेली का हल निकालो

बाप ने दिया बच्चों को ब्राह्मण जन्म का उपहार
इस उपहार को काम में लाते रहना तुम बारम्बार

यही उपहार तुम्हें सर्व खजानों से सम्पन्न बनाता
उमंग में हर कोई बच्चा वाह रे मैं का गीत गाता

अलबेलेपन के झुटके का माया करती इन्तजार
चोरी ना करे स्वमान की रहो माया से होशियार

ऊंचे भगवान के बच्चों तुम ऊँचा रखना स्वमान
बालक सो मालिक बनकर तुम कहलाओ महान

कर्म करके दिखाने में स्वयं को निमित्त बनाओ
सही लाइन पर चलकर तुम औरों को चलाओ

जिम्मेवारी जीवन में सबसे बड़ी टीचर कहलाती
जिम्मेवारी ही जीवन को श्रेष्ठ और महान बनाती

सबको लाइन पर चलाने की जिम्मेवारी उठाओ
बाप और सेवा को अपनी मन बुद्धि में समाओ

ब्रह्मा बाप समान अपने आपको निमित्त बनाओ
जिम्मेवारी और हल्केपन में पूरा बैलेंस बिठाओ

फॉलो फादर का ये स्लोगन जितना अपनाओगे
सफल टीचर का प्रमाण पत्र तब ही तुम पाओगे